।। ऊजागर पुरूष को अंग ।।

मारवाडी + हिन्दी

*

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ ऊजागर पुरूष को अंग लिखंते ||

|| कवत ||

पाप कुमत सुण घात || झूट जारी सो निंद्या ||
म्हेरी खिसे मार || मन कूंडे दिस संद्या ||
जूबा फासी मूठ || माय डाकण नही केहे ||
गोला स्वामी बात || निरस पड़ दे सब लेहे ||
बुरी बात नर जे करे || बूंझ्याँ कहे न आय ||
ऊजागर सुखराम जी || चौडे देत बजाय || १ ||

आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि संसार मे जिसने बुरे कर्म किया होगा,वही छिपा हुआ रहेगा । वे अपने बुरे कर्म दूसरो के सामने प्रगट नही कर सकते परन्तु जिसने अच्छे कर्म किए है,वे किस लिए छिपकर रहेंगे । संसारमे बहुत से पंथो के लोग,अपने धर्म को छिपा कर रखते है,किसी को बताते नही और अपना गुरू मंत्र भी किसी दूसरे को न बताते हुए,छुपा कर रखते है आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि अरे,छुपकर तो वे रहेंगे,जिन्होने चोरी किया है,वे अपनी चोरी छुपाकर रखेंगे । जिसने पाप किया है,वे अपने पाप को छुपाकर रखेंगे और कोई कुबुध्दि से बुरे कर्म किया होगा वो अपनी कुमती को छुपाकर रखेगा और कोई किसी का घात किया होगा,वो छुपा कर रखेगा और कोई खोटा,झूठा कर्म किया होगा या झूठ बोला होगा,तो वे छुपाकर रखेंगे और कोई परस्त्री से व्यभिचार किया होगा,वह छुपाकर रखेगा और कोई किसी की निन्दा किया होगा,तो ऐसे निन्दनीय कर्म छुपा कर रखेंगेऔर घर मे स्त्री ने खिझकर गाली दी होगी,तो वे सभी छिपाकर रखेंगे । मुझे स्त्री ने गाली दिया,ऐसा वह बाहर किसी को बताएगा नही और कही भी मार खाकर आया होगा,वह भी मार खाकर आया ऐसा नही बताएगा और जो कुण्ड़ापंथ मे गया है,वह भी नही बताएगा,की मै कुण्ड़ापंथ मे गया हूँ और जूवा खेलनेवाला,मै जूवा खेलता हूँ ऐसा कबूल नही करेगा और किसी को फांसी दिया होगा,या फांसी लगाने का किसी पर जाल रचा होगा,तो वह भी बताएगा नही और किसी मनुष्य पर मूठ मारी होगी,या जादुगार से मुठ चलवाई होगी,तो वह भी बाहर लोगो मे बताएगा नही और जिसकी मां ड़ाईन है,वह मेरी मां ड़ाईन है,ऐसा कभी भी,किसी को भी बताएगा नही और दोगला(गोला)(रखेल स्त्री से पैदा हुआ,वह बताएगा नही,की मेरी मां को फलाने ने रखैल रखा था,उससे मै पैदा हुआ हूँ ऐसा बताएगा नही और बताने की जरूरत पड़ी,तो मै दोगला हूँ ,ऐसा न कहकर,वह मै दरोगा हूँ ,ऐसा बताएगा)।(वैसे ही अपने अन्दर कोई भी)कमीपना(रहेगी,तो वह सारी बाते)पर्दे मे (छिपाकर)रखेगा ।(ऐसी नीरस बात बाहर बताएगा नही)। जो–जो मनुष्य बुरी बाते करते है,वे उससे पूछने पर भी बताऐंगे नही परन्तु आदि सतगुरू सुखरामजी कहते है,कि जो उजागर है,वे अपनी बात खुल्लम–

खुल्ला,एकदम प्रगट रूप से ठोक कर बताते है । ऐसे ही सभी धर्मो मे, जिसमे कुछ कमीपन रहेगी,या बुरी रीती होगी,वे ही प्रगट रूप से बाहर बताऐंगे नही परन्तु जिसका धर्म उत्तम और अच्छा तथा निर्मल है वे किस लिए छुपा कर रखेंगे । उजागर तो अपना धर्म प्रगट रूप से बजा कर बताऐंगे ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी बोले । ।। १ ।।

ज्यां पाया तत्त भेद ।। प्रगट सो किया पसारा ।।
सिष चेला पंथ थाप ।। ग्यान सो ग्रंथ ऊचारा ।।
ठाम ठाम पर धाम ।। जुग मेळा सो कीया ।।
भिन भिन्न कर समझाय ।। भेद प्रमात्म दीया ।।
लादो सोही क्हे गया ।। प्रगट जग के माय ।।
पायो ज्याँ सुखराम के ।। क्हो कुण रख्यो छिपाय ।। २ ।।

पहले भी जिसको जिसको इस तत्त का(सतस्वरुप ब्रम्ह का)भेद मिला है,वे अपना संसार मे,प्रगट फैलाव करके गये है । उन्होने शिष्य और चेले किए और अपने पंथ की स्थापना की और अपने ज्ञान का ग्रंथ उच्चारण करके,सभी को अपने ज्ञान बता कर गये और उनके पीछे जगह-जगह उनके धाम बांधे गये और संसार मे उनके मेले(यात्रा)होती रहती । और(अपना धर्म)अलग-अलग करके,सभी को समझाकर परमात्मा का भेद बताया । पहले भी जिसे जो प्राप्त हुआ है,उन्होने संसार मे सभी को प्रगट रूप से बताया है । आदि सतगुरू सुखरामजी कहते है जिसे प्राप्त हुआ है,उसने बताओ कोई छुपाकर रखा है क्या और कोई छिपा हुआ रहा है क्या?छुपकर तो जिसे कुछ मिला नही,वही छुप कर रहेंगे । ।। २ ।।

प्रसराम मत्त हरत ।। राज रघूनाथ जमायो ।।
किस्न पख सुण बांध ।। नाँव अपनो जस गायो ।।
बाँध्यो पंथ कबीर ।। गुराँ बिच राहा चलाई ।।
आद नाथ पख खेंच ।। जैन क्रिया बिध गाई ।।
बिना ध्रम बिन पखरे ।। क्हो कुण हे जग माय ।।
सुण मुर्ख सुखराम के ।। अेकी मोय बताय ।। ३ ।।

पहले भी परशुराम का मत्त हरण करके रामचन्द्र ने अपने राज्य की स्थापना की और कृष्ण ने गीता मे अपना पक्ष बांध कर,अपना ही नाम और अपना ही यश जो है,वो मै ही हूँ ,मेरे शिवाय कुछ भी नही,ऐसा वर्णन किया और कबीर ने अपना कबीर पंथ स्थापीत करके, अपने गुरू रामानन्द से अलग ही रास्ता चलाया और आदिनाथ(ऋषभदेव ने)अपना पक्ष लेकर,जैन धर्म की सभी क्रिया और विधी वर्णन की । इस ऋषभदेव ने जैन धर्म की स्थापना की,तो धर्म के बिना और पक्ष के बिना(पंथ के बिना),संसार मे ऐसा कौन है अरे मुर्ख सुन,ऐसा एक आध भी खोजकर मुझे दिखा ऐसा आदि सतगुरू

सुखरामजी बोले। ।।३।।

जीवाँ तारण ज्हाज ।। संत सिर्ज्या जग माही ।।
बाणी चली सुबास ।। सब्द प्रदेसाँ जाही ।।
सुण सुण जागे जीव ।। सकळ सोई द्रसण आवे ।।
भँवर बिलुंबे कंवळ ।। भुजंग ऊड चंदण जावे ।।
साध छिपाया क्यूं छिपे ।। ऊजागर जग माय ।।
सुर्ज ऊगा सुखराम के ।। किस्कूं सुझे नाय ।। ४ ।।

जीव को तारने के लिए जहाज क्या है,ऐसा कहोगे तो जीव को तारने के लिए सतस्वरुपी सन्त के रुपमे जहाज उत्पन्न किए है । ये संत तो जीव को तारने के लिए जहाज है फिर ऐसे जहाज रूपी संत छुपकर रहने से,उनसे जीव कैसे तरेंगे और वे जहाज रूपी संत छुपकर किसलिए रहेंगे?वे तो जीव को तारने के लिए ही आये है । उस संत की वाणी(ज्ञान)यह उनकी सुगन्धी है । उनकी शब्द(ज्ञान)रूपी सुगन्धी देशो देशो मे,प्रदेशो में जाती है । उनकी वाणी सुन–सुन कर,सभी जीव जागृत होते है,ज्ञान को समझने लगते और भक्ती करने लगते है । वे सभी जीव संत के दर्शन को आते है । जैसे भँवरा कमलपर जाकर,मुग्ध हो जाता है । जैसे भुजंग(सर्प)चन्दन के पेड़ से लग जाता है । चन्दन के पेड़ से लग जाने से,सर्प को शितलता मिलती है । वैसे ही संतो के पास गये हुए जीव को,शांतता आ जाती है । आदि सतगुरू सुखरामजी कहते है की संसार मे जो उजागर है,वे साधू छिपे हुए कैसे रहेंगे?सुर्य उदीत हुआ और कोई कहे,की मै इस सुर्य को छुपाकर रखूंगा,तो वह सुर्य,लोगों को दिखाई दिये बिना रहेगा क्या ? ।। ४ ।।

किसन देव कूं जोय ।। हनू तुलछी नही मान्यो ।।
ब्यास भागवत माय ।। स्मज गोरख नही आन्यो ।।
दत्त देव कूं संत ।। मुख गेहे र रख्यो नाही ।।
रामानंद कबीर ।। सिष गुर ऊळझ्या माही ।।
भक्त माळ नाभे कही ।। बर्ण्या संत अनेक ।।
दादू कूं सुखराम के ।। माही धर्‌या नही देख ।। ५ ।।

ऐसे ही साधू सुर्य की तरह छुपेंगे नही । कअी जीवो को सुर्य दिखाई नही देता । जैसे, घुबड़, वटवाघुळ,चमचेड़ी(पाकळी),उल्लू,चमगादड़ आदी,इन्हे सुर्य दिखाई नही देता । इसलिये सुर्य मे कोई कमतरता है यह मत समजो । वैसे ही संतो को कोई एकाध नही माना तो उस संत मे कुछ भी कमीपन नही आता)। जैसे कृष्ण को देखकर हनुमान ने और तुलसी दास ने नही माना । तो इनके नही मानने से कृष्ण कुछ कम नही हो गया । एक बार कृष्ण का जन्म होने पर,राम जन्मा ऐसा सुनकर,मारूती देखने गया और वहाँ कृष्ण को देखकर मारूती बोला,यह तो मेरा मालिक नही । मेरा मालिक तो राम और

सीता है । ऐसे ही एक समय तुलसीदास वृज में गया और वहाँ सभी को राधे-राधे ऐसा भजन करते देखकर,तुलसीदास बोला ।

|| दोहा ||

|| राधे राधे रटत है || आक टाक अरु केर ||
|| तुळसी बृज बासीनते || काहा रामसे बेर ||

और फिर तुलसीदास एक मन्दिर मे गया था । वहाँ एक पुजारी ने दोहा कहा,वह ऐसा है।

|| दोहा ||

|| अपणा अपणा इष्टकूं || नमन करे सब कोय ||
|| इष्ट बिहूना मानवी || नमे सो मुरख होय||

यह-तुलसीदास मूर्ती पूजक था । वह पत्थर की मूर्ती को मानने वाला था । उसने उस मन्दिर की मूर्ती को जाकर नमस्कार न करके,दोहा कहा ।

||दोहा||

|| कहा कहू छबी आजकी || भले बने हो नाथ ||
|| तुलसी मस्तक जब नमवे || धनुष्य बाण गही हाथ ||

तुलसीदास ने उस मूर्ती को नमस्कार न करते हुए,दोहा कहा,कि मै कृष्ण की मूर्ती को नमस्कार करूंगा नही । राम का रूप धारण करो,फिर मै नमस्कार करूंगा तब उस मूर्ती ने कृष्ण का रूप बदलकर,रामचन्द्र का रूप धारण किया,ऐसी कहावत है ।

|| दोहा ||

|| कित मुरळी कित चंद्रिका || कित गोपीयन को साथ ||
|| अपना जनके कारणे || कृष्ण भयो रघुनाथ ||

ऐसा कहते है,पत्थर की मूर्ती रघुनाथ कैसे बनी,कौन जाने तो मारूती और तुलसीदास ने कृष्ण को माना नही,तो भी कृष्ण कुछ कम नही हुआ ।)(वैसे ही कृष्णद्वैपायन) व्यासने भागवत(कथन किया),परन्तु उसमे(भागवत मे)गोरखनाथ को लाया नही ।(यदी व्यास ने गोरखनाथको लाया नही,तो भी गोरखनाथ कुछ कम हुआ नही)। एक समय दत्तात्रय से ब्रम्हा,विष्णू,महादेवने पूछा,तुम कौन और किसके पुत्र हो?और किसका ध्यान करते हो?

|| चौपाई ||

तब दत्तात्रय बोले,

|| मैं तीन देवका पुत्र कहाऊँ || अरु ब्रह्म ध्यान हिरदामें लाऊँ ||

इस तरह से दत्तात्रय त्रिदेवो से बोले,मै तीन देवों का पुत्र हूँ परन्तू तीन देवों की भक्ती नही करके,हृदय मे सतस्वरुप ब्रम्ह का ध्यान करता हूँ। इस प्रकार दत्तात्रय,ब्रम्हा, विष्णू, महादेव इनकी अपेक्षा अधिक था। तो भी इन तीनो देवताओ ने,दत्तात्रय को उच्चपद के संत माना नही। ब्रम्हा,विष्णू,महादेव के नही मानने से,दत्तात्रय कुछ कम हो गये क्या?) ऐसे ही रामानंद और कबीर(ये आपस मे एक दूसरे के शिष्य और गुरू ऐसा उलझे हुए थे । रामानन्द यह कबीर का गुरू था परन्तु बाद मे कबीर ने रामानन्द को ज्ञान देकर समझाया और सतस्वरुप का पकड़ने को कहा और दूसरा माया का पक्ष छोड़ने को

बताया । इस तरह से रामानन्द को कबीर ने ज्ञान दिया तो भी रामानन्द ने कबीर को कोई अधिक माना नही तो भी कबीर यह रामानन्द की अपेक्षा कम हुआ नही । वैसे ही नाभा नाम का एक भक्त हुआ उसने(भक्तमाल में)अनेक सन्तो का वर्णन किया । परन्तु उसमे दादूजी का वर्णन किया नही ।(नही करने का कारण यह की,दादूजी और नाभा एक ही समय मे हुए थे । नाभा यह सगुण उपासक था और दादूजी ये निर्गुण उपासक थे । ये दादूजी कंठी और तिलक धारण नही करते थे,इसलिये नाभा दादूजी से जाकर बोला,मैं भक्तमाल बना रहा हूँ उसमे अनेक भक्तों का वर्णन किया हूँ तो तुम भी कंठी और तिलक धारण करोगे,तो उस भक्तमाल मे तुम्हारा भी नाम डाल दूँगा तब दादू साहब ने एकदम इन्कार किया,की मै निर्गुण उपासक हूँ ,तुम्हारे भक्तमाल मे आने के लिए,मै कंठी और तिलक धारण करूगा नही तब नाभा बोला,की तुम कंठी और तिलक धारण नही करोगे,तो मै तुम्हे भक्तमालमे लाऊंगा नही तब दादूजी बोले नही लाओगे,तो मत लाओ । भक्तमाल मे तूं यदी नही लायेगा तो बाद मे दूसरा कोई भक्तमाल बनायेगा वह मुझे लायेगा, इसप्रकार से कहा इसलिए नाभा ने दादूजी को भक्तमाल मे लाया नही । यदी नाभाने दादूजी को माना नही,तो वे दादूजी नाभा की अपेक्षा कम हुए क्या?नाभा की अपेक्षा दादूजी बहुत ही ऊंचे पद के भक्त थे । यह नाभा की समज उल्लू जैसी थी,कि जिसे दादूजी जैसा सुर्य दिखाई दिया नही ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी बोले । ।। ५ ।।

कुंडल्या ।।

याँ याँने नही मानीया ।। क्हा कमता अे होय ।।
तीन लोक के बीच मे ।। धिन धिन्न क्हे सब लोय ।।
धिन धिन क्हे सब लोय ।। धाम बंधग्या जग माही ।।
मिल्या ब्रम्ह मे जाय ।। कम कसर कुछ नाही ।।
गुघूं कूं सुखराम के ।। सुरज न दीसे कोय ।।
आं याँने नही मानीयाँ ।। क्या कमता अे होय ।। ६ ।।

कृष्ण को मारूती और तुलसीदासने,गोरखनाथ को व्यासने,दत्तात्रय को ब्रम्हा,विष्णु, महादेव ने,कबीर साहेब को रामानन्दने और दादूजी को नाभा ने इस तरह से माना नही, तो ये इनकी अपेक्षा क्या कम हुए । इन्हे तीनो लोक में सभी धन्य धन्य कहते है । और संसार मे कृष्ण का द्वारकामे,गोरखनाथ का गोरखपुर,दत्तात्रय का गिरनार और माहोर और कबीरजी की काशी, दादूजी की नाराणा इन जगहों पर इनके धाम बांधे गये और ये सभी सतस्वरुप ब्रम्ह मे जाकर मिल गये । इनके किसी भी प्रकार की कमतरता या कसर नही रही। यदी उल्लू बुध्दीके मारूती,तुलसीदास,व्यास,ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,रामानन्द और नाभा आदिने सूर्य रूपी(कृष्ण, गोरखनाथ,दत्तात्रय,कबीर साहेब और दादूजी को)माना नही,तो इनकी अपेक्षा मे कम हो गये क्या ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी बोले । ।। ६ ।।

कवत ।।

मे तो देव असल हूं साचो ।। तिन मे फेर न सार ।।
तुं सुण गोल गम हे रासभ ।। पाखंड ले सिर धार ।।
भर्डे केसो भेष बणायो ।। दुनिया कूं ठग खावे ।।
अंतकाळ सब ही पिस्तासी ।। जे तुज बूझण आवे ।।
साची सबे मान तुम लीज्यो ।। बेद भागवत जोय ।।
के सुखराम बिना ऊजागर ।। कळ जुग भर्डा होय ।। ७ ।।

मैं तो देव असली हूँ और मैं देव सत्य हूँ इसमे मेरे देव होने मे कुछ भी फेर-फार नही । परन्तु तूं दोगला(रखैल का बच्चा)है और तेरे अन्दर बुध्दि गधे जैसी है। तूं पाखण्ड लेकर अपने सिर के उपर धारण किया है,तूं पाखंडी है। तूं बहुरूपीया और भांड के जैसा ढोंग किया है और भेष धारण करके,दुनिया को ठग कर खाता है। तुझे जो पूजने आयेंगे,वे अन्त समय मे पश्चाताप करेंगे यह बात मै तुझे कहता हूँ वह सत्य मान ले । वेदों मे और भागवतमे देख ले। आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि जो उजागर नही है,वे कलियुगमें बहुरूपीया जैसे,ढोंग करने वाले,भेषधारी होते है ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी बोले । ।।७।।

साखी ।।

बादी आदम देहे मे ।। ज्यूँ पंछयाँ गुघू जोय ।।
यूं ग्यान मे सुखराम के ।। बिन भेदी नर होय ।। १ ।।

वादी(वाद विवाद करने वाला)ये मनुष्य देह मे ऐसे हैं,जैसे पक्षियों में उल्लू है । वैसे ही ज्ञानीयों मे बिनभेदी जो भेद जानते नही वे मनुष्य उल्लू जैसे है ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी बोले ।।१।

राम नाम मुख बोलीया ।। सो मेरा गुर होय ।।
दूजा सब सुखराम के ।। सिष साखा सुण लोय ।। २ ।।

जो मुख से राम नाम बोलते है वे मेरे गुरू के जैसे है और दूसरे सभी मनुष्य शिष्य शाखा है यह सभी लोग सुन लो ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी बोले । ।। २ ।।

ज्याँ पूज्याँ अे लोक मे ।। यांही सुख नही कोय ।।
तां कूं सुण सुखराम के ।। वां कैसे सुख होय ।। ३ ।।

जिसे यहाँ पूजने से पूजने वाले को यहाँ सुख होता नही,तो उस पूजने वाले को आगे सुख होता नही,जिसकी भक्ती करके,यही दुख भोगते हैं,उस भक्ती करने वाले को,आगे सुख कैसे होगा ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी बोले ।। ३ ।।

लल फल सुखराम के ।। हर नही माने कोय ।।
तन बिन अरप्याँ पीव कूं ।। फर्जन केसे होय ।। ४ ।।

ललफल(हांजी-हांजी करने से),मुंह देखी बात कहने से,हर मानेगा नही कबूल करेंगे नही

। जैसे स्त्रीने अपना शरीर अपने पती को अर्पण किया नही तो उसे बच्चे कैसे होंगे?ऐसे ही हांजी-हांजी की बातों से हर खुष होगा नही और मोक्ष फल प्राप्त होगा नही)ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी बोले । ।। ४ ।।

मूळ गहयाँ मे क्या मिले ।। फळ डाळा मे होय ।।
बिन बादळ सुखराम के ।। बिरखा सुणी न कोय ।। ५ ।।

कोई कहेगा,की मै जड़ पकड़ के बैठा हूँ । तो जड़ पकड़ कर क्या होगा,फल तो ड़ालो मे है । (जैसे जड़ ब्रम्ह है,उसके ब्रम्हा,विष्णू,महादेव ड़ाले हैं,तो ड़ालो मे भी फल मिलेगा नही । यह सारा संसार टहनियां और पत्ते है इन टहनियां और पत्तो मे भी फल नही है । संत जन जो है,वो वृक्ष के फूल है और उन संत जनो मे ज्ञान रूपी फल है,यानी जिस बीज से यह वृक्ष तैयार हुआ वह बीज उस फल मे है । उस संत का ज्ञान रूपी फल जो खाते वे मग्न ज्ञान,ध्यान मे होते है । जैसे बादल के आये बिना,बारीष होती नही । वैसे ही गुरू के बिना, ज्ञान मिल सकता नही । गुरू है वो बादल के जैसे है,जैसे बादल से बारीष होती है,वैसे ही गुरू से ज्ञान प्राप्त होता है ।) ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी बोले। ।।५।।

मूळ गहयाँ बिन बाहेरो ।। ऊँचो चडयो न जाय ।।
फळ ही सुण सुखराम के ।। गोड गहे तो खाय ।। ६ ।।

जड़ पकड़े बिना उंचा चढ़ा जाता नही । पेड़ को पकड़कर उपर चढ़ोगे,तभी खाने को फल मिलेगा । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी बोले । ।। ६ ।।

क्रणी कर निर्बळ रहे ।। आपो गहे न काय ।।
ताँ के बळ सुखराम के ।। ज्हाँ तहाँ राम स्हाय ।। ७ ।।

जो करणी करके निर्बल रहते है,करणी का भक्ती का कुछ भी घमण्ड़ नही रखते और अहंपना भी रखते,की मै भक्त हूँ ,ज्ञानी हूँ ,ऐसा अहंपना भी नही रखते,उसका बल आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि जहाँ तहाँ उसकी राम सहायता करते हैं । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी बोले ।।। ७ ।।

।। इति ऊजागर पुरूष को अंग संपूरण ।।